Edit with WPS Office

St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (07)

Class- 11 पाठ - मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (भाग २) Date: 13/07/2020

शब्दार्थ

१) उद्विग्न- परेशान।
२) प्रतीति- विश्वास।
३) समर्थ- सक्षम।
४) मुखरित- व्यक्त।
५) अनाम- बिना नाम।
६) अनूप- बिना स्वरूप के।
७) निर्वासित- निकालना।
८) उत्कर्ष- ऐश्वर्या।
९) बोध- एहसास।
१०) दीप्ति- चमकता रूप
११) सेज- शय्या।
१२) अहर्निश- रात- दिन।
१३) शेषी- शेषनाग।
१४) जागर संकल्प- जागने का प्रण।
१५) अखंड- ना टूटने वाला।
१६) चित्त- मन।
१७) उफान- खौलना।

लघु प्रश्न

१) "आने वाली पीढ़ी पिछली पीढ़ी की ममता की पीड़ा नहीं समझ पाती और पिछली पीढ़ी अपनी संतान के संभावित संकट की कल्पना मात्र से उद्विग्न हो जाती है।"
क) प्रस्तुत पंक्ति के लेखक कौन हैं?
ख) प्रस्तुत पंक्ति का अंतर्निहित अर्थ स्पष्ट कीजिए?
उ: क) प्रस्तुत पंक्ति के लेखक 'विद्यानिवास मिश्र' जी हैं।
ख) प्रस्तुत पंक्ति 'विद्यानिवास मिश्र' जी यथार्थ के धरातल पर अपनी भावनाओं को लाकर स्थापित करते है। जहाँ मिश्र जी जीवन की सच्चाई को उजागर करते हैं कि नई पीढ़ी अपनी कामयाबी को हासिल करने हेतु इतने उद्विग्न हो हो उठते है कि अपनी पिछली पीढ़ी अर्थात माता-पिता, दादी- नानी की भावनाओं को तिलांजलि देते हुए उनकी परवाह किए बिना अपने भविष्य को बनाने के लिए उनसे दूर हो जाते हैं। वही पुरानी पीढ़ी अपनी मामत्व भाव के कारण अपनों की रक्षा के लिए अपना न्यौछावर कर देते हैं और उनके संकट मात्र की चिंता से घबरा जाते हैं। उनका संपूर्ण जीवन अपनी ही संतान के इर्द- गिर्द घूमता रहता है।

२) पराई लड़की (और लड़की तो हर एक पराई होती है, धोबी की मुटरी की तरह घाट पर खुले आकाश में कितने दिन फहरायेगी, अंत में उसे गृहणी बनने जाना ही है)।"
क) 'पराई लड़की' से कौन तात्पर्य है?
ख) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से भारतीय सोच को उजागर कीजिए।
उ: क) पराई लड़की' से तात्पर्य है- मेहमान लड़की, कन्या।
ख) भारत! जहां पर नारी को प्राचीन काल से ही चार दीवारों में रखकर, पराए घर में भेजने के लिए उसे बचपन से ही तैयार करवाया जाता है। लड़की यानी पराई धन अर्थात भारतीय समाज में यह निर्धारित था कि बड़ी होकर एक बेटी अन्य अनजान संसार को अपना मानने के लिए मजबूर है। जिस संसार में, जिस अपनों के पास, जिस परिवेश में एक लड़की परवरिश होती है, अपना विकास प्राप्त करती है; वही लड़की अपना सर्वस्व पीछे छोड़कर नए गृहस्थी में कदम रखने के लिए बाध्य है। उसकी आकांक्षाओं का गला दबाकर, उसकी उड़ान छीनकर, उसकी आशा का पंख काट कर उसे अनजान गृहस्थी की मालकिन बनाया जाता है, जहां वह दायित्व में फंसकर अपनी इच्छाशक्ति को ही खो बैठती है अतः यह सत्य है कि भारतीय परंपरा की यही रीत है कि एक बेटी ही पराई होती है न कि एक बेटा।

३) "जिसे ऐश्वर्य सौंपा जाने को है, उसका निर्वासन होना पहले से बदा है।"
क) कौन किसे कह रहा है?
ख) पाठ का नाम लिखिए।

Edit with WPS Office
उ: क)लेखक स्वयं से कह रहा है।
ख) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है।

४) "हां तब उसका दर्द नहीं छूता।"
क) पाठ का नाम लिखिए।
ख) किस दर्द की चर्चा की गई है?
उ: क) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है।
ख) विद्यानिवास मिश्र जी जब बाहर जाते, विदेश रहते, प्रवासी हो गए थे; उस वक्त उनके प्रियजन उनके नानी- दादी के अंदर उनसे दूर रहने की विरह- वेदना उमर पड़ती। वही विरह वेदना उनके हृदय में दर्द के रूप में प्रस्फुटित होती।

५) "जो भी हो इन्हीं पर हमारा भविष्य टिका है।"
क) प्रस्तुत पंक्ति में हमारा से कौन संबोधित है?
ख) किस पर भविष्य टिका है?
उ: क) प्रस्तुत पंक्ति में हमारा से पुरानी पीढ़ी संबोधित है।
ख) नई पीढ़ी अर्थात लड़कों पर भविष्य टिका है।

Teacher's Name - Riya Saha